Muhurta science in view of Valmiki Ramayana

(वाल्मीकि रामायण की दृष्टि में मुहूर्त विज्ञान)

Dr. Yogendra Kumar
Assistant Professor Astrology,
Maharishi University of Management and Technology, Mangala, Bilaspur (Chhattisgarh)

DOI: 10.52984/yogarima1105

सरांश :–

भारतीय परंपरा में यदि दृष्टिपात करें तो अनेंक उच्च कोटि के ग्रन्थों का वर्णन प्राप्त होता है। उसी में महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित वाल्मीकि रामायण का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इस महाकाव्य के विषय में डॉ. नीलम सिंह ने अपने शोध पत्र में बताया है कि रामायण आदि कवि वाल्मीकि द्वारा लिखा गया संस्कृत का एक अनुपम महाकाव्य है। यह हिन्दु स्मृति का वह अंग है जिसके माध्यम से रघुवंष के राजा राम की गाथा कही गयी। इसे आदि का काव्य भी कहा जाता है। रामायण के सात अध्याय है जो काण्ड के नाम से जाने जाते है। महर्षि वाल्मीकि के द्वारा श्लोकबद्ध भगवान श्री राम की कथा को वाल्मीकि रामायण के नाम से जाना जाता है तथा वाल्मीकि के आदिकवि कहा जाता है तथा वाल्मीकि रामायण को आदि रामायण के नाम से भी जाना जाता है।[1]

महाकाव्य के महत्व के विषय में प्रकाष डालते हुये बताया गया है कि वाल्मीकि रामायण का महत्व आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। सच्चे साहित्य में भविष्य निर्माण की क्षमता होती है, वह रामायण में है। रामायण इस कसौटी पर खरा उतरता है। उसमें आने वाली पीढ़ियों को राह दिखाने की क्षमता है। उसमें उदारता, धर्मसम्मत अर्थ और काम शरणागत तथा पीड़ित का रक्षण मानव की श्रे'ठता, मित्रता, आज्ञा पालन, व्रतनिष्ठा, मधुर तथा संयत्र भाषण आदि रामायण को निःसंदेह अमर महाकाव्य बनाती है।[2]

आम लोगों के बीच रामकथा बुराई के खिलाफ अच्छाई के संघर्ष और विभिन्न मानवीय संबधों की गरिमा और गहरी संवेदना के रूप में ही प्रतिष्ठित हुई है। यह एक तरह का सांस्कृतिक दस्तावेज है। सुखद आष्चर्य की बात तो यह है कि इतने बरसों में भी इसके आकर्षण में जरा भी कमी नहीं आई है। इस महाकाव्य की मूल भावना का आकर्षण और प्रभाव कितना गहरा है, इसका आभास एसिया के अनेक देषों की लोककथाओं, नाटक, नृत्य, स्थापत्य कला, मूर्ति कला आदि में रामकथा को मिले स्थान से भी होता है।[3]

अतः महत्व आदि का वर्णन दर्शाते हुये अपने इस शोध पत्र में इस महाकाव्य में ज्योतिषी मुहूर्त्त विज्ञान के विषय में बताने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द :– मुहूर्त्त , महाकाव्य, अभिजित कालाबधि, नक्षत्र, विन्द आदि।

यद्यपि मूलतः काल सर्वथा अविभाज्य एवं अमूर्त तत्व है तथापि व्यावहारिक प्रयोजनों की सिद्धि के लिए ज्योतिष शास्त्र में उसका सूक्ष्मातिसूक्ष्म विभाजन किया गया है। परमाणु (झरोखे में से आयी हुयी की सूर्य की किरणों में दिखाई पड़ने वाले धूमिल कणों में से किसी एक कण का साठवॉ भाग)– से प्रारंभ करके त्रुटि, वेध, लव, निवेश, क्षण, काष्ठा, कला, नाड़िका, मुहूर्त , दिन– रात, मास, संवत्सर आदि का विश्लेषण करते हुए न केवल सत्ययुगादी चारों युगों का अपितु ब्रह्मा तक की आयु का मान नितांत वैज्ञानिक पद्धति से निरूपित होकर ज्योतिष शास्त्र में उपलब्ध है।

उक्त विवेचन के अनुसार एक दिन–रात में तीस मुहूर्त होते हैं और एक मुहूर्त की कालावधी तीस कला अथवा दो नाडिका मानी गई है। सूर्यादि ग्रहों तथा अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्रों की गति–विगति के तारतम्य से मुहूर्तों का अनुकूल किंबा प्रतिकूल प्रभाव देने वाला होना भी स्वतः सिद्ध है। इसलिए कुछ मुहूर्त शुभ और कुछ कुत्सित कहे जाते हैं।

रामायण कालीन समाज की ज्योतिष शास्त्र में गहन आस्था थी। वहॉ न केवल विवाह, नूतन गृह प्रवेश अथवा राज्याभिषेक जैसे मांगलिक कृत्यों के अवसर पर ही शुभ मुहूर्त का शोधन कराया जाता था, अपितु सामान्य शुभ कार्यों के समय भी अनुकूल ग्रह, नक्षत्रादि का विचार करने की परंपरा थी। महर्षि वाल्मीकि जी ने प्रसंगानुसार कुछ मुहूर्तों का वर्णन किया है, जो आज भी यथावत् स्वीकार्य है। यथा – प्रजापति भग से उपलक्षित उत्तरा–फाल्गुनी नक्षत्र वैवाहिक नक्षत्रों में सर्वाधिक प्रशस्त माना जाता है। भगवान श्री राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भ्राताओं का क्रमशः सीता, उर्मिला, मांडवी और श्रुत्कीर्ति नामक चारों राजकुमारियों के साथ विवाह–संस्कार एक ही दिन उत्तरा–फाल्गुनी नक्षत्र में ही हुआ था –

''एकाह्ना राजपुत्रीणां चतसृणां महामुने।

पाणीन् गृह्णन्तु चत्वारो राजपुत्रा महाबलाः।।

उत्तरे दिवसे ब्रह्मन् फल्गुनीभ्यां मनीषिणः।

वैवाहिकं प्रशंसन्ति भगो यत्र प्रजापतिः।।'' [4]

जब चंद्रमा पुनर्वसु नक्षत्र से संयुक्त हो, तब वृहस्पति देवता वाले पुष्य नक्षत्र में राज्याभिषेक जैसे महनीय कार्य संपन्न किए जाते थे। श्री राम के राज्याभिषेक के लिए ऐसा ही शुभ मुहूर्त निर्धारित किया गया था, जैसा कि महाराजा दशरथ ने स्वयं श्री राम को बताया था –

''अद्य चन्द्रोऽभ्युपगमत् पुष्यात् पूर्वं पुनर्वसुम।

श्वः पुष्ययोगं नियतं वक्ष्यन्ते
दैवचिन्तकाः।।

स्त्वाहमभिषेक्ष्यामि यौवराज्ये परन्तप।।''
[5]

बुधवार को छोड़कर प्रत्येक दिन का आठवां मुहूर्त अभिजित कहलाता है– अष्टमे दिवसस्यार्धे त्वभिजित् संज्ञकः क्षणः। मध्यानात् पूर्वापर काल में होने वाले इस मुहूर्त की समयावधि 2 घड़ी अर्थात् 48 मिनट होती है।

अभिजित् के सही काल मान को जानने की प्रक्रिया भी बहुत सरल है ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दिनमान के आधे समय को सूर्योदय ने जोड़ने से मध्यान्ह काल हो जाता है इसमें 24 मिनट घटाने और अपराह्न के 24 मिनट जोड़ने से अभिजित का मान निकल आता है जो भी हो इस मुहूर्त में समस्त दोषों के निवारण की तथा सभी शुभ कर्मों को पूर्णतया सफल करने की अद्भुत क्षमता है इस सद्गुण के कारण इसे विजय मुहूर्त भी कहा जाता है। युद्ध यात्रा के लिए इस मुहूर्त को सर्वाधिक उपयुक्त मुहूर्त के रूप में मान्यता प्राप्त थी।

शत्रु पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाने वाली अपनी समर– यात्रा के लिए श्रीराम ने अभिजित् मुहूर्त को ही चुना था। और उसी कालावधि में सैन्य संचालन के लिए सुग्रीव को निर्देश दिया था।

तत्र पुष्येऽभिऋचस्व मनस्वरयतीव माम।

श्व

संयोगवश उस दिन विजय यात्रा के लिए मान्य नक्षत्रों में परगणित उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र भी था। और पुष्य नक्षत्र भी उससे बहुत दूर नहीं था। इस दुर्लभ मणिकांचन संयोग के समय प्रस्थान करने वाली सेना को विजयश्री प्राप्त हुई थी यही अभिजित को विजय मुहूर्त कहने का रहस्य है, श्रीराम का निर्देश इस प्रकार है–

''अस्मिन मुहूर्ते सुग्रीव प्रयाणमभिरोचय।

युक्तो मुहूर्ते विजये प्राप्तो मध्यं दिवाकरः।

उत्तरा फाल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते।

अभिप्रयाम सुग्रीव
सर्वानीकसमावृताः।।'' [6]

कभी–कभी अज्ञानवश अथवा त्वरावश जब कोई व्यक्ति कुत्सित मुहूर्त में किसी कार्य को कर डालता है तो उसका कुफल भी उसे भोगना ही पड़ता है।

रावण में जिस मुहूर्त में जानकी जी का अपहरण किया था तो उसे मालूम नहीं था उस समय विन्द नामक कुत्सित मुहूर्त था और उसका फल यह था कि उस मुहूर्त में चुराई गई वस्तु तो उसके स्वामी को यथाशीघ्र ही प्राप्त हो जाती है। परंतु चोर को गले में कांटा फंस जाने से व्याकुल मछली

की भांति तड़प तड़पकर प्राणोत्सर्ग करना पड़ता है –

''येन याति मुहूर्तेन सीतामादाय रावणः।

विप्रणष्टं धनं क्षिप्रं तत्स्वामी प्रतिपद्यते।।

विन्दो नाम मुहूर्तोऽसौ न च काकुत्स्थ सोऽबुधत्।

त्वत्प्रियां जानकीं हत्वा रावणो राक्षसेष्वरः।।

झषवद् बडिशं गृह्य क्षिप्रमेव विनश्यति।

न च त्वया व्यथा कार्या जनकस्य सुतां प्रति।

वैदेह्या रंस्यसे क्षिप्रं हत्वा तं रणमूर्धनि।।'' [7]

यह सारी महत्वपूर्ण सूचनाएं जटायु ने श्रीराम को प्रदान किए और उन्हें जानकी जी की पुनः प्राप्ति के लिए आश्वस्त किया था।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि बाल्मीकि रामायण में मुहूर्त विज्ञान का अच्छा विश्लेषण प्राप्त होता है। रामायण काल में मुहूर्तों का विचार किया जाता था। ज्योतिष शास्त्र रामायण काल में ही अपना स्थान सर्वोपरि रखता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1- Singh, Dr. Neelam INDIAN JOURNAL OF RESEARCH Volume-7 | Issue-2 | February-2018

2- रामायण कालीन जनपदीय जीवन का अनुषीलन 1996 पृष्ठ संख्या 1

3- ऋम्बकराज, मखानी की रामायण पर धर्माकूत व्याख्या पृष्ठ संख्या – 6

4- साहित्याचार्य पाण्डेय पं0 रामनारायण दत्त शास्त्री 'राम' वाल्मीकि रामायण 1/72/12–13 गीताप्रेस गोरखपुर (उ.प्र.)

5- साहित्याचार्य पाण्डेय पं0 रामनारायण दत्त शास्त्री 'राम' वाल्मीकि रामायण 2/4/21–22 गीताप्रेस गोरखपुर (उ.प्र.)

6- साहित्याचार्य पाण्डेय पं0 रामनारायण दत्त शास्त्री 'राम वाल्मीकि रामायण 5/4/3–5 गीताप्रेस गोरखपुर (उ.प्र.)

7- साहित्याचार्य पाण्डेय पं0 रामनारायण दत्त शास्त्री 'राम वाल्मीकि रामायण 3/68/12,14 गीताप्रेस गोरखपुर (उ.प्र.)